THE RESEARCH JOURNAL OF ENVIRONMENT, CULTURE AND DEVELOPMENT (T.R.J.E.C.D.)
A Monthly International Journal of Multidisciplinary Research, Peer Reviewed-Refereed & Impact Factor - 4.8
ISSN : 2349-3313, Vol. : 10, No. : 8, January - 2025, Conference Special Issue Hindi

ग्रामीण पर्यटक : विस्तृत अध्ययन

Nelan Tirkey
Assistant Professor, Department of Geography, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa, Jharkhand

ग्रामीण पर्यटन का अर्थ है, शहरी जीवन से हटकर ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर वहां के जीवन, संस्कृति, परंपराओं, कला और प्रकृति से जुड़ी गतिविधियों का अनुभव करना। ग्रामीण पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटक गांवों कस्बों और छोटे शहरों में प्रकृति और सांस्कृतिक धरोहरों का अवलोकन करते हैं। ग्रामीण पर्यटन में पर्यटक स्थानीय लोगों से संपर्क करते हैं और उसकी जीवन शैली, रीति–रिवाज, खाद्य संस्कृति, कला और संगीत का अनुभव करते हैं। इसके साथ ही यह पर्यटन ग्रामीण विकास, स्थानीय रोजगार और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। ग्रामीण पर्यटन का उद्देश्य गांव में अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना और ग्रामीण जीवन के बारे में जागरूकता फैलाना होता है।

"विश्व एक पुस्तक है और जो लोग यात्रा नहीं करते भी इसका केवल पृष्ठ पढ़ पाते हैं।" सेंट ऑगस्टीन का यह कथन वास्तव में यात्रा की अनुभव को बढ़ाता है। और एक आकर्षक देश के रूप में भारत के ग्रामीण क्षेत्र विश्व भर में यात्रियों का अपने गंतव्य के रूप में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों को चुनते हैं और यात्रा करते हैं। यात्रा किसी भी उद्देश्य के लिए हो सकती है। पहले की सीमाएं जिसमें पर्यटन मनोरंजन और परिवार एवं मित्रों से मिलने तक ही प्रतिबंधित था लेकिन अब विस्तृत उद्देश्यों को शामिल करने के लिए इसके क्षेत्र को विस्तृत कर दी गई है। यात्रा की अवधि न्यूनतम के स्थान पर अधिकतम होना चाहिए पर्यटन संबंधी विस्थापन रात्रि विश्राम के साथ या इसके बिना भी हो सकती है।

ग्रामीण पर्यटन के प्रकार :– यह पर्यटन का महत्वपूर्ण रूप है। जिसमें पर्यटक कृषि कार्यों का अनुभव करने के लिए शहर से गांव की ओर जाते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के द्वारा की जाने वाली अनेक प्रकार की खेती को देखते हैं। फसलों की बुवाई और कटाई का अनुभव करना पर्यटकों को बहुत रोमांचित करता है। इसके साथ ही पर्यटक स्थानीय कृषि उत्पादों का भी स्वाद लेते हैं। इसे किसानों के लिए आय के नए स्रोत प्रदान करके और क्षेत्र में आगंतुकों को लाकर ग्रामीण क्षेत्रों को आर्थिक रूप से लाभ पहुंचा सकता है। यह टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय उद्योगों और खाद्य सुरक्षा में कृषि के महत्व को बारे में वहां के लोगों को शिक्षित करने में सहायता कर सकता है।

प्राकृतिक पर्यटन गांव के प्राकृतिक सुंदरता को देखे जाने से जुड़ा है। पर्यटक प्राकृतिक दृश्य जैव विविधता, वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र, पहाड़ियों, जिलों और नदियों के आसपास जाते हैं। इस प्रकार के पर्यटन से पर्यावरण और जैव विविधता का महत्व बढ़ता है। और इसे संरक्षित करने के लिए जागरूकता फैलाने का एक तरीका भी बनता है। प्राकृतिक पर्यटनवाद का उद्देश्य पर्यटन के महत्व से प्राकृति और पर्यावरण की सुरक्षा करना और साथ ही स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ पहुंचाना है। प्राकृतिक पर्यटनवाद न केवल पर्यटकों के लिए एक आनंददायक अनुभव है, बल्कि यह वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के पर्यटन से पर्यटकों को जैव विविधता वनस्पतियों और प्राणियों के संरक्षण के महत्व का ज्ञान मिलता है। जब पर्यटक प्राकृतिक स्थलों की यात्रा करते हैं तो उन स्थानों की सुरक्षा के लिए योगदान देते हैं जिससे इन स्थानों के संरक्षण में मदद मिलती है।

पारंपरिक संस्कृति व कारीगरी पर्यटन :– इसमें पर्यटक स्थानीय लोक कला, संगीत, नृत्य, त्योहार, कारीगरी व पारंपरिक शिल्पकला का अनुभव करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प होते हैं। हम देखते है कि भारतीय गांव में पारंपरिक शिल्प कला का महत्व बहुत ज्यादा दिखाई देता है। राजस्थान के कुम्हार, उत्तर प्रदेश के कचहरी बनाने वाले, गुजरात के लोहार और कर्नाटक के लकड़ी के बर्तन बनाने वाले कारीगर अपने पारंपरिक कला को बनाए रखते हैं। इन कारीगर की कला न केवल उनके समुदाय की पहचान है बल्कि यह पर्यटन के माध्यम से एक स्थाई बाजार भी हासिल करती है। भारत की विभिन्न क्षेत्रों में लोक नृत्य और संगीत की समृद्ध परंपराएं हैं। पंजाब में भांगड़ा और गिद्ध, राजस्थान में कालबेलिया, उत्तर भारत में कथक और भरतनाट्यम आदि नृत्य शैलियां ग्रामीण क्षेत्रों में आम बात है। ये नृत्य और संगीत स्थानीय परंपराओं और भावनाओं को व्यक्त करते हैं और ग्रामीण जीवन की सादगी और सुंदरता को दर्शाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र पारंपरिक त्यौहारों को बड़े धूमधाम से मनाते हैं। जैसे दीपावली, होली, दशहरा इन त्योहारों के दौरान पारंपरिक कपड़े पहनने, विशेष व्यंजन बनाने और पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठान करने की परंपरा है।

सामुदायिक पर्यटन :– इस प्रकार के पर्यटन में पर्यटक स्थानीय समुदाय के साथ रहकर अनेक जीवन

शैली और संस्कृति को समझते हैं। यह एक तरह से सांस्कृतिक आदान–प्रदान का माध्यम बनता है। और पर्यटन का अस्थाई प्रभाव छोड़ता है। सामुदायिक पर्यटन एक ऐसा पर्यटक मॉडल है जिसमें स्थानीय समुदाय पर्यटन से जुड़े अनुभवों का विकास प्रबंधन और स्वामित्व करते हैं। इस तरह स्थानीय समुदायों को पर्यटन से सीधे फायदा मिलता है। साथ ही यात्रियों को किसी अन्य स्थानों और संस्कृति का परीक्षण और अनुभव करने का अवसर मिलता है। समुदाय आधारित पर्यटन में किसी अन्य संस्कृति का व्यावहारिक अनुभव देखना, सुनना, स्वाद लेना और ऐसी चीज करना जो हम कभी नहीं कर सकते हैं। लोग और स्थान के बीच गहरा रिश्ता होता है। बिन नॉर्थ ईस्ट की भूमि पर आप मेहमान होते हैं उनसे सीधे बातचीत करते हैं ।

स्वरूप पर्यटन :– यह ग्रामीण इलाकों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों और आयुर्वेद, हर्बल उपचार योग प्राकृतिक चिकित्सा, स्पा और मसाज जैसी सेवाओं को शामिल करता है। आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है जो प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करती है ग्रामीण इलाकों में आयुर्वेदिक उपचारों का महत्व काफी बढ़ गया है। खासकर इन जगहों पर आयुर्वैदिक हर्बल उपचार सेवाएं प्रदान की जाती हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में जल उपचार, मिट्टी चिकित्सा और अन्य प्राकृतिक तरीकों का उपयोग किया जाता है। गांव में इन उपचारों की परंपरा बहुत पुरानी है। और अब यह पर्यटकों के बीच आकर्षण का एक प्रमुख कारण बन चुका है। योग और ध्यान मानसिक शांति व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी होते हैं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित आश्रम और स्वास्थ्य केन्द्रों में लोग योग करते हैं। यह स्थान पर्यटकों को शांति, संतुलन और ऊर्जा प्रदान करने के लिए आदर्श होते हैं। स्पा और मसाज केन्द्रों का चलन भी ग्रामीण इलाकों में बड़ा है इन केन्द्रों में प्राकृतिक तेल और औषधीय तेल का उपयोग करके शरीर की मालिश की जाती है जिससे पर्यटक को आराम मिलता है। पर्यटन प्रायः मनोरंजन गतिविधियों के उद्देश्य से किया जाता है। अधिकांश पर्यटक माहौल में परिवर्तन के लिए किया जाता है। पर्यटन आनंददायक का वह भाग होता है जिसमें लोग गाने, संगीत सुनने तथा उसका आनंद लेने के लिए शामिल होते हैं। संगीत के माध्यम से हम न केवल संगीत की नई शैली का अनुभव करते हैं। बल्कि हम विभिन्न संस्कृतियों और लोगों के बीच संवाद स्थापित करते हैं। संगीत एक ऐसी सार्वभौमिक भाषा है जो बिना किसी शब्द के भी समझा जा सकता है। जब एक पर्यटक किसी अन्य देश या क्षेत्र में संगीत का अनुभव करते हैं तो वह वहां की सामाजिक व संस्कृतिक धारा को समझने में सक्षम होता है। यह अनुभव न केवल उसकी यात्रा को समृद्ध बनता है बल्कि उसके व्यक्तिगत और मानसिक विकास में योगदान करता है।

ऐतिहासिक और विरासत पर्यटन यह जानते हैं जानने में रुचि रखते हैं की हमारे पूर्वज किस प्रकार विशेष क्षेत्र में रहते थे और किस प्रकार अपना जीवन यापन करते थे। विरासत में जो अपने मूल से जुड़ने और पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने के लिए दूरस्थों की यात्रा करते हैं जैसे विवाह के समय लोग अपने पैतृक घर पर साथ जमा होते हैं।

ग्रामीण पर्यटन का महत्व :– ग्रामीण पर्यटक पर्यटन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण रूप है जो, ग्रामीण क्षेत्र के समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और कई लाभ देता है। जब ग्रामीण क्षेत्र की यात्रा करते हैं तो वह स्थानीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हैं। और विभिन्न तरीकों से मदद करते हैं। ग्रामीण पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों में विकास और मेजबान समुदायों के जीवन स्तर में मदद करता है।

ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय व्यवसायों को प्रोत्साहन मिलता है। पर्यटक होटल, होमस्टे, रेस्टोरेंट, हस्तशिल्प और कृशि आदि उपभोग करते हैं। जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वृद्धि होती है। परंपराएं और त्योहारों को बढ़ावा मिलता है। पर्यटकों को यहां के पारंपरिक तरीके, संगीत, नृत्य, कला का अनुभव मिलता है। जो कि इसके संरक्षण में मदद करता है। प्राकृतिक संसाधनों के संवर्धन में जैसे झिले, पहाड़, जंगल और नदी इन स्थानों की देखभाल और संरक्षण में पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी पैदा करता है। ग्रामीण पर्यटन के कारण स्थानीय निवासियों को रोजगार के अवसर मिलते हैं। होमस्टे, गाइड सेवाएं, कृषि पर्यटन हस्तशिलप आदि में काम करने की रोजगार के नए अवसर खुलते हैं। ग्रामीण पर्यटन का समाज में काफी बदलाव देखा जाता है। जिसमें ग्रामीण समुदायों को बाहरी दुनिया से जोड़ता है। जिससे उनके दृष्टिकोण में बदलाव आता है इस प्रकार गांव के लोग अपने जीवन को सुधारने के लिए नए विचारों को अपनाते हैं। ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय कुटीर उद्योग को बढ़ावा मिलता है। ग्रामीण इलाकों में हथकरघा और कुम्हारी कला आदि का उत्पादन होता है। पर्यटन के बढ़ने से इन कुटीर उद्योग को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलती है। जिससे उनकी मांग बढ़ती है।

इस प्रकार ग्रामीण पर्यटन न केवल स्थानीय समुदायों के लिए लाभकारी होता है। बल्कि यह सामाजिक संस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होता है।

ग्रामीण पर्यटन के लाभ :– पर्यावरणीय लाभ ग्रामीण पर्यटन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद करता है। पर्यटन जब प्राकृतिक स्थान में होता है तो यह स्थानीय समुदाय को उनके महत्व का एहसास कराता है और संरक्षण के प्रयासों को बढ़ावा देता है। सामाजिक लाभ भी ग्रामीण पर्यटक से होता है। ग्रामीण पर्यटन स्थानीय लोगों को अन्य संस्कृतियों और जीवन शैलियों से परिचित कराता है। यह संस्कृती आदान–प्रदान को बढ़ावा देता है और विभिन्न समुदाय के बीच समझ और सहिश्णुता को बढ़ावा देता है। स्थानीय व्यवस्थाओं, हस्तशिल्प, कृषि, होमस्टे आदि को प्रोत्साहित करता है। जिससे वहां के लोगों को आर्थिक लाभ मिलता है। स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलने से गांव में रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं। पर्यटक ग्रामीण जीवन खेती व पारंपरिक गतिविधियों को देखने का अवसर प्राप्त करते हैं। इससे शहरी व ग्रामीण समुदायों के बीच बेहतर समझ और संबंध स्थापित होता है।

ग्रामीण पर्यटन के चुनौतियां :– ग्रामीण पर्यटन मैं कई प्रकार की चुनौतियां सामने आती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख है।

संपर्क और परिवहन की समस्या :– कई बार ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन की सुविधा सीमित होती हैं जिससे पर्यटकों के लिए वहां तक पहुंचना मुश्किल हो सकता है। सड़क की सुविधा नहीं होने के कारण इस प्रकार पर्यटन में रुकावटें आती है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा और भूकंप के कारण ग्रामीण पर्यटन प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के कारण भी पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कभी–कभी पर्यटकों का आना और गांव में बाहरी संस्कृ ति का प्रवेश स्थानीय संस्कृति और रीति–रिवाज पर नाकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। यह स्थानीय समुदाय के लिए एक चुनौती हो सकता है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता होती है। जैसे कि अच्छा आवास, स्वच्छता और स्वास्थ्य सुविधाएं आदि। कई बार इन सुविधाओं की कमी होती है जो पर्यटन के विकास में रुकावटें डालती है। स्थानीय समुदाय की जागरूकता की कमी को क्षेत्र में ग्रामीण समुदाय को पर्यटन के लाभ के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती है। जिससे वे इसका सही तरीके से लाभ नहीं उठा पाते हैं। इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क का अभाव होने से पर्यटक को सूचनाएं प्राप्त करने में मुश्किल हो सकती है। इन चुनौतियों को पार करने के लिए योजना बनाने और बुनियादी सुविधाओं में सुधार करने की आवश्यकता है।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उपाय :–

संचार और प्रचार :– ग्रामीण पर्यटन के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए बेहतर प्रचार और प्रसार के माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है। सोशल मीडिया, वेबसाइट और अन्य डिजिटल माध्यमों के जरिए ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। बुनियादी सुविधाओं में सुधार होना चाहिए ताकि पर्यटकों के लिए यात्रा करना सुरक्षित और आरामदायक हों। ग्रामीण समुदायों को पर्यटन उद्योग से संबंधित प्रशिक्षण देना चाहिए ताकि पर्यटकों को बेहतर सेवाएं प्रदान कर सके और अधिक लाभ कमा सकें। पर्यावरण को बचाने के लिए ग्रामीण पर्यटन को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से स्थाई बनाना चाहिए यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद करेगा और भविष्य में पर्यटन के अवसरों को बनाए रखेगा।

भारत में ग्रामीण पर्यटन :– भारत में ग्रामीण पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है। यहां के विभिन्न राज्य और गांव अपने पारंपरिक जीवन संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। उदाहरण स्वरूप माजुली असम, खोनोमा नागालैंड, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, गुजरात, अरुणाचल प्रदेश, तेलंगाना, केरल, राजस्थान आदि।

पिपिली उड़ीसा :– उड़ीसा एक छोटा सा गांव पिपली अपने जटिल एप्लिक वर्क के लिए प्रसिद्ध है। जो एक पारंपरिक शिल्प है। जो पीढ़ियों से चला आ रहा है। यह गांव रंग–बिरंगे कपड़ों का एक जीवन संग्रहालय है। जहां कारीगर जीवित दीवार पर लटकाने वाली वस्तुएं, छतरियों और वस्त्र बनाते हैं। स्थानीय कारीगरों का समर्थन करके और उत्पाद खरीद कर यात्री इस पारंपरिक ि ाल्प को संरक्षित करने में मदद करते हैं और समुदाय की आर्थिक स्थिरता में योगदान देते हैं।

कच्छ गुजरात :– कच्छ अपनी समृद्ध संस्कृति विरासत के लिए जाना जाता है। जिससे रण उत्सव भी शामिल है। जो इस क्षेत्र की कला, सिाल्प, संगीत और नृत्य का जश्न मनाने वाला त्यौहार है। यहां पर्यटक पारंपरिक भुगां झोपड़िया में रह सकते हैं। स्थानीय कारीगरों से बातचीत कर सकते हैं और कच्छ के महान रंण के अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र का पता लगा सकते हैं।

जीरो घाटी अरुणाचल प्रदेश :– अरुणाचल प्रदेश में स्थित जीरो घाटी एक बहुत ही खूबसूरत जगह है। जो अपटानी जनजाति का घर है। और प्राकृतिक के बीच एक शांत जगह है। यात्री अपाटानी जीवन शैली का अनुभव कर सकते हैं। जिससे उनकी अनूठी कृषि

पद्धतियां और जीरो संगीत महोत्सव जैसे जीवंत त्यौहार शामिल हैं। जीरो घाटी टिकाऊ जीवन शैली का एक मॉडल है, जहां अपाटानी जनजाति पर्यावरण के अनुकूल खेती और वन संरक्षण का अभ्यास करती है।

पोचमपल्ली तेलंगाना :– पोचमपल्ली जिले को भारत का रेशम शहर कहा जाता है। यह शहर अपने हाथ से बने हुए वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है। तेलंगाना का यह गांव पारंपरिक बुनाई की दुनिया में एक विशेश अनुभव प्रदान करता है। जहां रंगाई से लेकर बुनाई तक की जटिल प्रक्रिया को देखा जाता है। यहां की बुनी हुई साड़ी और कपड़े बहुत ही सुंदर होते हैं जिससे पर्यटक लोग खरीदते हैं। पोचमपल्ली की बुनाई की प्रथा स्थिरता पर आधारित है जिसमें प्राकृतिक रंगों और हथकरघों का उपयोग किया जाता है जो पर्यावरणीय प्रभाव को काम करते हैं। स्थानीय बुनकरों का समर्थन करके पर्यटक इस सदियों पुरानी शिल्प के संरक्षण में योगदान देते हैं।

माजुली असम :– दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप माजुली असम में एक सांस्कृतिक आकर्षण का केंद्र है। अपने त्योहारों, मठों, नृत्य और आदिवासी संस्कृति के लिए जाना चाहता है। आगंतुक दीप के हरे–भरे परिदृश्यों का पता लगता है। यहां पारंपरिक असमिय नृत्य और नाटक का प्रदर्शन किया जाता है। मांजुली अस्थाई पर्यटन पहलों का केंद्र है। इस द्वीप पर कटाव से बचाने के लिए जैविक खेती को बढ़ावा देने और क्षेत्र की जैव विविधता को संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।

खोनोमा, नागालैंड :– खोनोमा जिला में भारत का पहला "हरित गांव" है। यहा के टिकाऊ प्रथाओं को ग्रामीण पर्यटन में एकीकृत किया जा सकता है। नागालैंड का ग्रामीण क्षेत्र जनजाति का घर है और अपनी सीढ़ी दर खेती, चाय का बागान, हरे–भरे जंगलों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। खनोमा स्वैच्छिक पर्यटन के अवसर प्रदान करता है जहां पर्यटक कई अन्य कृषि और वन संरक्षण जैसी सामुदायिक परियोजनाओं में सहायता कर सकता है। यह न केवल यात्रा के अनुभव को समृद्ध करता है बल्कि गांव के विकास में योगदान देता है।

उत्तराखंड :– उत्तराखंड में भारत के कुछ सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं। जैसे नैनीताल, मसूरी, देहरादून आदि। उत्तराखंड को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। इसका वजह है यहां वैदिक संस्कृति के कुछ अति महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान हैं। उत्तराखंड के हर कोने में किसी न किसी देवता या देवी का मंदिर है। इस राज्य में भारत के सबसे प्रमुख धार्मिक नगरों में से एक हरिद्वार है। हरिद्वार के निकट स्थित ऋषिकेश है जहां लोग योग करने के लिए जाते हैं। यहां की आम भाषा पहाड़ी है यहां अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। फसल को लगाने और काटने के उपलक्ष्य में भी त्यौहार मनाए जाते हैं। यहां के लोग मुख्य रूप से खेती करते हैं।

उत्तर प्रदेश :– उत्तर प्रदेश भारत के सबसे बड़े और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्यों में से एक है। यहां की ग्रामीण पर्यटन संस्कृति बहुत ही समृद्ध और विविधता पूर्ण है। उत्तर प्रदेश की ग्रामीण भूमि को लेकर पर्यटकों में गहरी रुचि है क्योंकि यहां की परंपराएं संस्कृति और जीवन शैली बहुत ही आकर्षक है। उत्तर प्रदेश का ग्रामीण पर्यटन न केवल यहां के ग्रामीण जीवन को दर्शाता है बल्कि यह पर्यटकों को भारतीय ग्रामीण जीवन का असली रूप देखने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। उत्तर प्रदेश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं इन क्षेत्रों में बरेली, आगरा, मथुरा, कानपुर ग्रामीण पर्यटन के मुख्य केंद्र हैं।

निष्कर्ष :– पर्यटन को बहुलवाद और बहुसंस्कृतिवाद को बढ़ावा देने वाला एक माध्यम के रूप में देखा जा सकता है। जो भारत के ग्रामीण में विभिन्न समुदायों के बीच धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिक सद्भाव के निर्माण और इसके विस्तार में सहायक हो सकता है। पर्यटन, गाइड टूर पैकेज, अतिथि सेवाओं के माध्यम से पर्यटन रोजगार सृजन हेतु अपार संभावनाएं विद्धमान है और पर्यटन के माध्यम से भारत की सॉफ्ट पावर को बेहतर बनाने हेतु भारत को इस क्षेत्र की किसी भी संभावना को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए।

अतः हम कह सकते हैं कि ग्रामीण पर्यटन न केवल पर्यटकों के लिए एक आदित्य अनुभव प्रदान करता है बल्कि, यह स्थानीय समुदायों की सामाजिक आर्थिक स्थिरता को भी मजबूत करता है। इसके द्वारा स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र के लिए आर्थिक व सामाजिक विकास का एक प्रमुख माध्यम बन सकता है।

संदर्भ :–

- www.drishtilas.com.
- Hi wikipedia, org.
- www worldpackers.com.